केला

कीट

पैसयूडोस्टम बोरर (Odoiporus longicollis):

वयस्क लाल भूरा या काला होते हैं। कीट गर्मी और मानसून के महीनों के दौरान सक्रिय होते है। स्टेम के अन्दर कीडा छिद्र और स्टेम के भीतर भोजन मिलना। प्रारंभिक लक्षण पौधे के रिसाव और काला जन के रूप में होता है जो ग्रब के छेद बोर से बाहर आता है। अन्त में पूरा पौधा मर जाता है।

नियंत्रण: गंभीर संक्रमण के मामले में प्रभावित पौधों को उखाड कर जला दिया जाना चाहिए। कीटों के अंडों, लार्वा, प्यूपा और व्यस्क आबादी के नियंत्रण के लिए सलफोस (3 गोली/पौधा) के प्रयोग की सिफारिश की है। पैसयूडोस्टम के भीतर गोली रखने के बाद, भट्ठा कीचड़ के साथ प्लास्टर किया जाना चाहिए। इसके नियंत्रण हेतु साफ खेती एक महत्वपूर्ण उपाय है। कीटों को रोकने के लिए कारबोफूरेन (कणिकाओं/ मल का 3 ग्राम) का उपयोग काफी प्रभावी है। वैकल्पिक रूप से, एन्डोसलफन (0.04 प्रतिशत) अथवा कार्बेरिल डब्लू पी (0.1 प्रतिशत) भी कीट आबादी को रोकता है।

रिहजोम विविल (Cosmopolites sordidus):

केले के पौधे में धुन छिद्रक का लार्वा या ग्रब टयूनलिंग द्वारा खाना प्रदान करती है। कई गंभीर मामलों में, सुरंगों का स्टेम से ऊपर कई फुट तक विस्तार होता है। कार्म क्षीण हो जाते हैं और रोटन टिशु का समूह बन जाता है। कार्म की क्षति पौधों को मिलने वाले पोषक आहार को रोक देती है। पत्तियां पीली, सूखी और मर जाती हैं। भारी संक्रमित वृक्षारोपणों में, उत्पादन कम होता है। मरे और सुखे हुए केला पौधों को पूरा आहार और नए कटे या रूटिंग पैसयूडोस्टम के अन्दर रहते हैा महिला घुन या तो सड़े हुए छद्म तने में अपने अंडे देता है या अंडे को जीवित पौधें मे ले जाता है, जहां एक छिद्र के अन्दर अंडों को अकेले रखा जाता है। पौध रोपण सामग्री द्वारा बोररस एक बागान से दूसरे बागान में फैलता है।

नियंत्रण: बगीचे में मलबा साफ होना चाहिए जिसमें बोररस जीवित रह सकते हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण है कि खेती में साफ रोपण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए जिसे विविलों से मुक्त पहचाना जाए। पुराने रिहजोमस या पैसयूडोस्टम के टुक्डों को 1-2 फीट की लंबी दूरी पर काट कर फैलाए जाते हैं और पौधों और वृक्षारोपण तल पर रखा जाता है। वयस्क भृंग इन स्टेमों में माइग्रेट हो जाते हैं और इन्हें हाथ से एकत्र किया जा सकता है और दूषित हो सकते हैं। विविलों के आक्रमण से रिहजोम की सुरक्षा करने के लिए रोपण से पहले 30 मिनट तक मोनोक्रोटोफोस (0.5 प्रतिशत) में सकरों को डूबोया जाए।

बनाना एफीड (Pentalonia nigronervosa):

कीट, वायरस का कारण है जिसकी वजह से गुच्छों के ऊपर रोग पैदा हो जाते हैं। पीले हरे नाइमपस और वयस्क सूक सैल पौधों की जड़ को खोखला और चूस जाते हैं। प्रभावित भाग फीका पड़ा जाता है और विकृत हो जाता हैं। उच्च आर्द्रता इन कीटों को कई गुणा करने में सहयोग करती है। एफिड्स ज्यादातर पत्तियों की निच्ली सतह पर पाये जाते हैं।

नियंत्रण: 10-15 दिनों के अंतराल पर मोनोक्रोटोफॉस (0.05%) या मेलाथियान (0.1%) का छिड़काव एफीड आबादी को प्रभावी ढंग से रोकता है। कीटों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए दानेदार कीटनाशक जैसे फोरेट @1.0 Kg a.i/ha को मिट्टी में मिलाना चाहिए।

फ्रूट और लीफ सकेरिंग बीटल (Colaspis hypochlora) :

बरसात के मौसम में इन कीटों का आना ज्यादा होता है। वयस्क बीटलों को युवा पत्तियों और युवा फलों की त्वचा से भोजन प्राप्त होता है। टुटे हुए फलों पर ध्ब्बे पड़ जाते हैं और फलों की त्वचा पर गंभीर खरोंच आने से फलों का विकास नहीं हो पाता है और उनका वाणिज्यिक मूल्य भी कम हो जाता है।

नियंत्रण: जहां पर कीटों की आबादी ज्यादा है वहां पर बगीचों से घास मोथा को हटाए जाने से और कीटनाशकों के उपयोग को कम करके प्राय: कीटों की आबादी स्तर को कम किया जा सकता है। ऐसा न होने पर बीटलस गंभीर आर्थिक नुकसानों को पैदा करते रहेंगे, कीटनाशकों के उपयोग को रोका जाना चाहिए। गंभीर संक्रमणों के मामले में ृइन्डोसुलफन (0.04%) या कार्बेरिल WP (0.1%) का छिड़काव करने पर कीटों की आबादी को रोका जा सकता है।

बुरोइंग निमेटोड (Radopholus similis):

रोग का पहला लक्षण जडों पर छोटे गहरे धब्बों का होना है। जड़ ऊत्तकों में निमेटोड अंडों को जमा करता हैं। अंडों सेने के बाद लार्वा जड़ ऊत्तकों को भोजन पहुंचाता है। ऐसे क्षतिग्रस्त जड़ ऊतकों पर कवक तेजी से आक्रमण करता है। गुच्छें में फलों की संख्या घट जाती है और प्रत्येक फल छोटा हो जाता है।

प्रभावित पौधें उर्वरकों, सिंचाई या कल्चरल पद्धतियों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाते हैं। रटोन फसलों में निमेटोड का निर्माण बहुत तेजी से होता है।

नियंत्रण : रोपण के समय कारबोफूरन 3जी या फोरेट 10जी 10 ग्राम/गड्ढा के हिसाब से अथवा रोपण के समय नीम केक (250-400 ग्राम/गड्ढा) का अनुप्रयोग करने से कीट आबादी को कम किया जा सकता है। नियंत्रण करने के उपाय जैसे बढ़ने वाले संक्रमित पौधों के लिए निमाटिसाईडस का प्रयोग और फैलों भूमि में निमाटोड-मुक्त कोरम के रोपण की सिफारिश की गई है। हाल ही में ग्रानुलर निमाटिसाईडस बहुत ही लोकप्रिय हो रहे हैं। उर्वरकों के साथ समय पर संयुक्त मिट्टी के चारों और हाथ से लगाना आसान हो जाता है। कुछ प्रणालीगत कार्रवाई भी है। इन्हें बारिश या सिंचाई के पानी से मिट्टी में नीचे डाला जाता है। निमाटोडस को नियंत्रित करने में निमाकुर (फिनामिफोज) के तीन प्रयोग प्रभावी रहे है।